हमारी कमजोर हालत

शैख मुहम्मद इशाक मुलतानी.

नोट: आप से दरखास्त है की इसे
भाषा या ग्राम्मर का अदब ना समझे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

अगर कोई कहे कि मेरी बीमारी के लिये कोई ऐसा डोक्टर लावो जो इस फन का माहिर और स्पैशलिस्ट भी हो, फिर देखा कि वो उस डोक्टर को पलंग पर उठाकर ला रहे हे कि उस्को लकवा, पेरेलाइज हे, मरीज ने अभी अपना हाल कहना शुरू किया तो पता चला कि ये बहरे भी हे, फिर लिख कर हाल पेश किया तो पता चला कि ये अंधा भी हे, तो आखिर चीख कर यही कहेगा कि जालिम मुझे ऐसे स्पैशलिस्ट की जरूरत नही अब डोक्टर को लाने वाले ने फौरन उन्की डिग्री उन्की जेब से निकाल कर दिखा दे तो क्या ये डिग्री कुछ मायना रखेगी.

इसी तरह आज हमारा हाल भी यही हे हमारे पास मुसल्मान होने की सनद, सर्टीफिकेट हे, लेकिन कमजोर मुसल्मान हे, लोग कहते हे कि आप छोटी छोटी बातो की क्यू नसीहत करते हे, मेरे दोस्तो छोटी छोटी बातो ही से तो सारे की तकमील होती हे, इस डोक्टर मे छोटी छोटी बातो की ही तो कमी

थी, कान से बहरा था, कान फरा यानी एक हिस्सा हे, पूरे जिस्म के एतबार से, इसी तरह आंख, नाक हाथ पाव सब पूरे जिस्म के मुकाबले मे छोटी छोटी बातो ही तो थे, जो इस डोक्टर के खराब थे, मगर इस छोटी छोटी बातो की खराबी वाले डोक्टर को पसन्द नही किया, बल्की उस्को बेकार समाज़ कर वापिस कर दिया,

अपने इस्लाम के बारे मे गौर किजीये, अगर किसी दरख्त की सब शाखे काट दी जाये और सिर्फ टेहनी बाकी रहे तो इस टेहनी को जलाने के काम मे तो ला सकते हे, मगर इस्से फल फूल की उम्मीद नही कर सकते, इसी तरह इस्लाम के तमाम छोटी छोटी बातो को एहमीयत हासिल हे कामिल मुसल्मान उस वकत होगा जब उस्के तमाम छोटी छोटी बातो पर अमल होगा.

हवाला: एक हज़ार अनमोल मोती उर्दु से मज़मून का खुलासा लिप्यान्तरण किया गया हे.